पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र प्रयागराज

पर्यावरण सुदृढ़ता पर समझौता ज्ञापन

दिनांक 01.07.2021 को पारि–पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र तथा सद्गुरू सदाफल विहंगम योग संस्थान, झूंसी, प्रयागराज द्वारा पर्यावरण सुदृढ़ता में सहयोग हेतु एक समझौता ज्ञापन किया गया। कार्यक्रम में केन्द्र के समस्त वैज्ञानिक तथा अधिकारियों के साथ योग संस्थान के महन्त तथा कार्यकर्ता आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारम्भ विभिन्न सांस्कृतिक पौधरोपण के साथ हुआ। केन्द्र प्रमुख डा0 संजय सिंह के साथ उपस्थित विभिन्न प्रतिभागियों द्वारा एक–एक पौधा रोपित किया गया। डा0 सिंह ने कार्यक्रम में उपस्थित अधिकारियों तथा कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए समझौता ज्ञापन के उद्देश्य से अवगत कराया। उनके अनुसार इसका उद्देश्य गंगा तट पर असन्तुलित पारिस्थितिकी तंत्र और समतल गंगा तटीय क्षेत्रों वाले स्थलों के पुनर्स्थापन व कृषिवानिकी को बढ़ावा देना है, साथ ही नैतिक/ज्योतिषीय/ऐतिहासिक महत्व के वृक्षारोपण की योजना तैयार कर संस्कृत वन विकसित करने हेतु परियोजनाएं शुरू करना है।

योग संस्थान के सन्त श्री नामदेव जी महाराज ने संस्थान के उद्देश्यों से अवगत कराते हुए कहा कि प्रयागराज में संगम के पास गंगा तट पर सुरम्य स्थानों में स्थित विहंगम योग आश्रम ने नदी के पवित्र तट पर पारिस्थितिकी वनस्पति–जीवों का सतत विकास करना है साथ ही उन्होने कहा कि समझौता ज्ञापन के माध्यम से स्थापित किये जा रहे उद्यान के निरीक्षण तथा रख रखाव हेतु स्वयं सेवक लगाए जायेंगे, जो कि समय–समय पर छंटाई, निराई, रोपण तथा सिंचाई आदि के साथ ही अन्य सम्बंधित कार्यों को पूरी लगन से करेंगे।

संस्थान की ओर से श्री आलोक यादव, वैज्ञानिक–ई तथा डा0 एस0 डी0 शुक्ला, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी कार्यक्रम में उपस्थित रहे जिन्हे इस संस्कृति वन की स्थापना का दायित्व दिया गया।

समझौता ज्ञापित करने वाले दोनो पक्षों के समन्वय से कार्यक्रम की सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

प्रयागराज/आसपास | आज का दिन 1819 में अमेरिका में पहला बचत बैंक बैंक ऑफ सेविंग इन न्यूयॉर्क शुरू हुआ। | हिन्दुस्ता

शोध और योग संस्थान विकसित करेंगे संस्कृत वन का मॉडल

प्रयागराज | संवाददाता

संस्कृत वन का मॉडल विकसित करने के लिए शोध और योग संस्थान एक साथ आए हैं। शुक्रवार को शोध संस्थान पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र और सदगुरू सदाफल विहंगम योग संस्थान, झूंसी के बीच समझौता हुआ।

सदगुरू सदाफल विहंगम योग संस्थान का चयन इसलिए किया गया है क्योंकि यह गंगा के किनारे है। समझौते के तहत झूंसी स्थित योग संस्थान में औषधीय, धार्मिक महत्व और पर्यावरण को शुद्ध करने में सहायक पौधे लगाए जाएंगे। जिसे शोध संस्थान के विशेषज्ञों की मदद से विकसित किया जाएगा। संस्कृत वन में कौन-कौन से पौधे लगेंगे, इसे दोनों संस्थान के विशेषज्ञ मिलकर तय करेंगे। आगे संस्कृत वन को और ज्यादा विस्तारित करने की भी योजना है। समझौते पर हस्ताक्षर से पूर्व शोध संस्थान के प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने प्रतिभागियों के साथ पौधरोपण किया। डॉ. सिंह ने बताया कि इस समझौते से गंगा तट पर असन्तुलित पारिस्थितिकी तंत्र और समतल गंगा तटीय क्षेत्रों वाले स्थलों के पुनर्स्थापन एवं कृषिवानिकी को बढ़ावा मिलेगा। साथ ही नैतिक, ज्योतिषीय और ऐतिहासिक महत्व के पौधरोपण की योजना तैयार कर संस्कृत वन विकसित करने की परियोजना शुरू की जा सकेगी। योग संस्थान के संत नामदेव जी महाराज ने संस्थान के उद्देश्यों के बारे में जानकारी दी। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कुमुद दूबे ने वन के महत्व की जानकारी दी। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर, तकनीकी अधिकारी डॉ. एसडी शुक्ला के साथ अन्य शोध छात्र भी उपस्थित रहे।

पारि पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र और सदगुरु सदाफल योग संस्थान की ओर से संस्कृत मॉडल वन बनाने के लिए हुआ समझौता। • हिन्दुस्तान

वनों से उत्पन्न फलों के संरक्षण पर हुई चर्चा

प्रयागराज। पारि–पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र परिसर में शुक्रवार को अमृत महोत्सव के तहत वनों से उत्पन्न फलों का संरक्षण एवं मूल्यवर्धन विषय पर एक दिनी वेबिनार आयोजित किया गया। जिससे देशभर से 300 से अधिक वैज्ञानिक जुड़े। कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए केंद्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने कहा कि वनों की सुरक्षा से पर्यावरण और मानव जीवन की सुरक्षा सुनिश्चित होगी। इस मौके पर प्रो.आर वासुदेव, डॉ. लोबरंग वांग्चू, प्रो.एस रामाराव तथा डॉ. विजय सिंह मीणा ने विभिन्न विषयों पर विचार व्यक्त किए। समन्वय डॉ. अनीता तोमर ने किया। डॉ. कुमुद दूबे ने महुआ, बेर तथा जामुन के रोपण से स्थानीय जन को होने वाले आर्थिक लाभ के बारे में जानकारी दी। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव ने आर्थिक महत्व के फलों जैसे ऑवला, बेल तथा सहजन आदि के बारे में विस्तार से बताया।

शातिर च
कार्ड क्ल

लखनऊ। ए
निकालने पहुं
उलझा कर ठग
थे। धोखे से हा
स्कीमर मशीन
चुराया जाता थ
को बीकेटी में
जालसाजों ने
एसपी ग्राम
मुताबिक इंदौर
गुरुवार देर रात
पकड़ा गया
जेठवारा निवा
यादव, भूपेंद्र सिं
आलोक कोरी

शोध एवं योग संस्थानों के समन्वय से संस्कृति वन मॉडल की स्थापना

प्रयागराज। गंगा तट पर असंतुलित पारिस्थितिकी तंत्र और समतल गंगा तटीय क्षेत्रो वाले स्थलो के पुनर्स्थापन व कृषि वानिकी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र तथा सद्गुरु सदाफल विहंगम योग संस्थान, झूंसी प्रयागराज द्वारा पर्यावरण सुदृढ़ता मे सहयोग हेतु एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) हुआ।

इस दौरान केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने उपस्थित अधिकारियो तथा कार्यकर्ताओ को सम्बोधित करते हुए समझौता ज्ञापन के उद्देश्य से अवगत कराया। कहा कि इसके साथ ही नैतिक, ज्योतिषीय, ऐतिहासिक महत्व के वृक्षारोपण की योजना तैयार कर संस्कृत वन विकसित करने हेतु परियोजनाएं शुरू की जायेगी। इस दौरान केन्द्र के समस्त वैज्ञानिक तथा अधिकारियो के साथ योग संस्थान के कार्यकर्ता आदि उपस्थित रहे।

योग संस्थान के सन्त नामदेवजी महाराज ने संस्थान के उद्देश्यो से अवगत कराते हुए कहा कि प्रयागराज मे संगम के पास गंगा तट पर सुरम्य स्थानो मे स्थित विहंगम योग आश्रम नदी के पवित्र तट पर पारिस्थितिकी वनस्पति-जीवो का सतत् विकास करना है। उन्होने कहा कि समझौता ज्ञापन के माध्यम से स्थापित किये जा रहे उद्यान के निरीक्षण तथा रख-रखाव हेतु स्वयंसेवक लगाए जायेंगे, जो समय-समय पर छंटाई, निराई, रोपण तथा सिंचाई आदि के साथ ही अन्य सम्बंधित कार्यो को पूरी लगन से करेंगे। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ

कुमुद दूबे ने वनो के महत्व से अवगत कराने के साथ समझौता ज्ञापन के अंतर्गत केन्द्र द्वारा संस्कृत वन की स्थापना के लिए एक नियमावली के विकास तथा वितरण मे योग संस्थान द्वारा सहयोग प्रदान करने का आग्रह किया। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ अनीता तोमर ने पर्यावरण मे वनो की भूमिका से रूबरू कराते हुए केन्द्र द्वारा प्रदान की जाने वाली तकनीकी सहायता से अवगत कराया। जिसमे संयंत्र चयन, पौधो का स्रोत, स्थान की बनावट व रख-रखाव आदि शामिल है।